ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 8, August 2022 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

'व्यक्तित्व विकास' नयी शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य

डा0 मो0 इमरान खाँ
एसोसिएट प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान
मुमताज़ पी0जी0 कालेज

व्यक्तित्व का विकास सभी के लिए आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है जो उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए लाभकारी रहा है। नयी शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक से उच्च शिक्षा के सफर में अन्य बातों के साथ 'व्यक्तित्व विकास' पर बल दिया गया है। शिक्षा तब तक अपने उद्देश्य को पूरा नही करती जब तक छात्र/छात्राओं में विश्वास पैदा न हो कि वह आत्मनिर्भर बन सकें। अपने जीवन को कामयाब बनाने में उसका व्यक्तित्व अधिक महत्व रखता है।

हम किसी उद्देश्य तक पहुँचने के लिए किन्तु–परन्तु करते रहे और सही समय पर निर्णय नही ले पाते हैं तो राह के पग भारी हो जाते हैं, फलस्वरूप सफलता की प्राप्ति में विलम्ब होता है, कभी असफल भी होते हैं अधिकतर छात्र/छात्राओं में विश्वास की कमी होती है वे पढ़ते हैं, परीक्षा भी पास करतें, किन्तु बोलने और कई लोगों के सामने (भाषण) देने की हिम्मत नहीं करते हैं, उसी तरह अपने विचार को लिखने से भी कतराते हैं। मेरा प्रयास रहता है कि उनकी इस कमी को दूर करवा सकूं।

सुनने की भी कला होती है, अच्छा सुनने वाला ही अच्छा वक्ता हो सकता है। बोलने और लिखने की कला व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण पग है। विद्यार्थियों में अविश्वास को दूर करने में निम्न दिशा निर्देश नयी शिक्षा नीति के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक है जिसे पंचशील सिद्धान्त भी कह सकते हैं।

1. हीन–भावना से निकलना–

अधिकतर विद्यार्थी यकीन करते हैं कि वे शारीरिक और मानसिक रूप से कमज़ोर हैं, जो उनमें वंश–परमपरा से आयी है, ये दूर नहीं हो सकती । जब यह उनमें ग्राहय कर जाती है तब वह इन्हें निकालने के लिए किसी से बात नहीं करना चाहते फलस्वरूप वह आत्मविश्वास खो देते हैं। जबकि यह अधिकतर काल्पनिक होता है।

उक्त कमी को दूर करने के लिए प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि अतीत जो भी रहा हो मैं वर्तमान और भविष्य में कामयाब होकर ही रहूँगा। इसके लिए चाहे हमें कितना ही श्रम करना पड़े। इसके लिए सबसे पहले हमारी वाणी सत्य, प्रिय और हितकारी है। स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी निकलते हैं तो हम मानते हैं कि उन्हें अच्छी तरह प्रशिक्षित कर दिया गया है, कमज़ोर आवाज़ जीवन को कैसे सफल बनाएगी, कला–साहित्य, विज्ञान, गणित, समाज–विज्ञान विषयों को व्यक्त करने के लिए वाणी सजीव होनी चाहिए।

अतः अपनी हीन भावना को दफन करके अपने में विश्वास लाकर वाणी के उच्चारण को सही किया जए। कोमल ध्वनि, प्रशिक्षित वाणी से निकली शुद्ध एवं मधुर आवाज़ सभ्यता, संस्कृति को इंगित करती है। इस प्रकार की वाणी वाला व्यक्ति अधिकतर का मन मोह लेता है। सबसे बड़ा लाभ वक्ता की हीन–भावना गायब हो जाती है। अतः उसमें आत्मविश्वास आता है जो अपने आज और कल को सफल बना सकता है।

2. 'साहस' से सफलता मिलती है–

सफलता पाने का आधार 'साहस' ही है। साहस/उत्साह से ही बार–बार असफल

होने पर भी जब तक सफलता नहीं मिले प्रयास करते रहना चाहिए। NO का अर्थ (Next Oportunity) (अगला अवसर) है। जो व्यक्ति असफलता से नही डरता और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रयास करता है, वही सफल होता है। साहसी व्यक्ति कभी झिझकते नहीं, कांपते नही, विचलित नही होते, धीरे–धीरे उनकी शक्ति विराट रूप ले लेती है, ऐसे में उन्हें अपने ऊपर कभी सन्देह नहीं होता, वे विपरीत हालात में भी अपनपे लक्ष्य पर नज़र जमाए रहते हैं। साहस के बल पर मनुष्य ने क्या–क्या नहीं किया? इसी से किसानों ने ऊसर (बंजर) भूमि को लहलाते खेतों में बदल दिया। सैकड़ों मनुष्य ने तूफान, बाढ़, अग्निकांड और 'कोराना वायरस' के कारण 'लाकडाउन' में जीवन को बचाने के लिए संघर्ष किया है। शिक्षा सम्बन्धी योग्यता, सिफारिश, नक्षत्र आदि काम नही आ सकते यदि आप में साहस/उत्साह नहीं है।

3. आत्म–निर्भर बनिए–

अधिकतर का मानना है कि हमारे लिए कोई और सोचे चिन्ता करे, योजना बनाए तथा काम करे। इससे व्यक्ति में विश्वास की कमी आती है। व्यक्ति में आन्तरिक शक्ति ईश्वर (प्रकृति) प्रदत्त होती है उसको बाहर निकालकर उससे लाभ लेना आपका कार्य है। आप तब तक अपने साधनों और संभावनाओं का अनुमान नहीं लगा सकते, जब तक कि आप उन्हें परीक्षा कसौटी पर न कसें। आप दूसरों की नकल नहीं करें खुद सोचे विचार करें और अपना कार्यक्रम निर्धारित करें और क्रियान्वित करें।

विद्यार्थी को विश्वास होना चाहिए कि उसकी तैयारी पूरी है, शिक्षक छात्र/छात्राओं को यह एहसास करा सकता है कि उसके अन्दर कौन सी शक्ति है। अपनी सहायता खुद कीजिए ''जो अपने से प्यार नहीं करता वह दूसरे से भी नहीं कर सकता है ''जो कष्ट सहन नही चाहता तथा दूसरों पर निर्भर रहता है वह सफल नही होगा। आप खुद आगे बढ़ें तभी दूसरे भी मदद करेंगे। मनुष्य में यदि अपनी

आवश्यकताओं के लिए संघर्ष की इच्छा होती तो वह असभ्य ही बना रहता । सभ्यता और संस्कृति का आधार श्रम और संघर्ष ही रहा है। जो अपने सहारे जीता है, अपने बल पर चलता है, जो बाधाओं से घबराता नहीं, जो अपनी आन्तरिक शक्ति पर विश्वास करता है, जिसे अपनी कार्यकुशलता तथा कर्म शक्ति पर विश्वास है वही विजय प्राप्त करता है।

4. अभी आरम्भ कीजिए–

ज्योंही कार्य का विचार आए, उत्साह आए, उसी समय कार्य आरम्भ करिए। तुरन्त कार्य करने से आप अनेक प्रकार की उल्झनों से बचेंगे। डॉ0 चामर्स कहते हैं ''मानवीय सम्बन्धों में महान सक्रिय सफलता के लिए दो गुण आवश्यक है 1. कार्य शक्ति 2. तुरन्त कार्य करने की आदत।

जिस व्यक्ति ने तुरन्त कार्य करने की आदत नही बनायी , व सफल नही हो सकता, जो व्यक्ति 'समय' के मूल्य से परिचित है, जिसे अपना एक–एक क्षण बहुमूल्य लगता है उसके प्रत्येक काम पर उसके व्यक्तित्व की झलक दिखती है। समय पालन से बढ़कर व्यावसायिक योग्यता कोई नहीं, जो दूसरों का समय बचाने का ध्यान रखता है, वह अपना भी वक्त बचाता है। समय–पालन से अपने में विश्वास पैदा होता है, इससे वह दूसरों का विश्वास पात्र भी बनता है, ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता ही है।

5. अवसर का निर्माण कीजिए–

पहल तो आपको ही करनी होगी, कुछ व्यक्ति हारना नहीं जानते, वे बहाना नही बनाते, वे कार्य करते हैं और आगे बढ़ते हैं। वे किसी की सहायता की प्रतीक्षा नहीं करते, वे अपनी सहायता आप करते हैं वे अवसर की प्रतीक्षा नहीं बल्कि अवसर का निर्माण

करते हैं। महान कार्यकर्ता काम करने का शौकीन, हर समय चौकन्ना रहता है, वह कार्य करते हुए सर्तकतता से समय की गतिविधि परखता है, उसे ही अवसर दिखता है। पं0 जवाहर लाल नेहरू ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जेल में बन्दी के दौरान 'भारत एक खोज' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। अमेरिकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन बचपन में लकड़ी काटता था लोगों से किताब मांगकर पढ़ता था वकील बना फिर राष्ट्रपति और दास प्रथा समाप्त करायी। सामान्य छात्र/छात्राएं निश्चित उद्देश्य और अटल इच्छा शक्ति से जीवन में सफल हुए।

कोई भी बाधा जिसे आप अपने उद्देश्य से बड़ा समझते हैं, सफलता से दूर रहेगा जो बातें तुम्हें नीचे गिराए हुए है, क्या वे बली है या तुम्हारी इच्छा प्रबल है इसी पर आपके भविष्य का निर्णय निर्भर है। लुइस कैरोल की निम्न पंक्ति डॉ0 कलाम को प्रेरित करती है, ''जब तक कमजोरी ताकत न बन जाए, यह धुप्प अंधेरा–उजाला न बन जाए, गलत बात हमारी–सही न हो जाए तब तक शिल्प, लक्ष्य और चुनौती परखता रहेगा दिन–रात।''

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर आप शिक्षित हैं, योग्य हैं, साथ ही आप विनम्र, सहनशील, समय पर सही बात कहते हैं, समय पर कार्य करते हैं, मृदभाषी हैं, तो आप अन्यों से अपना कार्य करा सकते हैं और दूसरा आपका कार्य करके प्रसन्न होगा। यही आपकी सफलता है और कामयाबी के पायदान पर चढ़ते हुए शिखर पर पहुँचेगें। 'शिखर' पर पहुँचकर वहाँ बने रहना भी 'कला' है और व वही है जो आपने शिखर पर पहुँचने के लिए अपनायी थी। पूर्व वैज्ञानिक/राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम की राय से बात समाप्त कर रहा हूँ, ''कठिन परिश्रम, अध्ययन करना व सीखना, सदभाव तथा क्षमा करना, ये सब मेरे जीवन के मील के पत्थर हैं।''

उक्त दिशा–निर्देश को विद्यार्थी अपने जीवन में ग्राह्य करें तो नयी शिक्षा नीति

का उद्देश्य 'व्यक्तित्व विकास' पूरा होगा। फलस्वरूप सभी आत्म–निर्भर बनेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- प्रथम अंतरिक्ष यात्री यूरी गारगिन – राकेश शर्मा
- अपनी आत्मशक्ति को पहचाने – रॉबिन शर्मा
- आप खुद ही बेस्ट हैं – अनुपम खेर
- मेरा भारत – डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम
- कलाम का बचपन – सृजन पाल सिंह
- जीत आपकी – शिव खेड़ा